

विशद श्रेयांसनाथ विधान



प्रथम - १
द्वितीय - ६
तृतीय - १२
चतुर्थ - २४
पञ्चम - ४८

रचयिता
प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

- कृति - विशद श्रेयांसनाथ विधान
- कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री १०८ विशदसागरजी महाराज
- संस्करण - प्रथम - २०१२ • प्रतियाँ : १०००
- संकलन - मुनि श्री १०८ विशालसागरजी महाराज
- सहयोग - ब्र. सुखनन्दनजी भैया
- संपादन - ब्र. ज्योति दीदी आस्था दीदी, सपना दीदी
- संयोजन - किरण, आरती दीदी, उमा दीदी • मो. ९८२९१२७५३३
- प्राप्ति स्थल - १ जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
२१४२, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : ०१४१-२३१९९०७ (घर) मो.: ९४१४८१२००८
२. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-१०७, बुध विहार, अलवर मो.: ९४१४०१६५६६
३. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान-०९४१६८८२३०१
- मूल्य - २१/- रु. मात्र

- : अर्थ सौजन्य :-
श्री जीवनलाल-प्रमिला जैन
ए-३३, सूरजमल विहार, दिल्ली, मो. ९९१०६६२५६९

मंगल भावना

संसार दुःखों का समूह है। दुःखों से बचने के लिए प्राणी हमेशा प्रयत्नशील रहता है। यह प्रयत्न कभी अनुकूल तो कभी प्रतिकूल होते हैं। अनुकूल अर्थात् सम्यक् प्रयत्न ही दुःख दूर करने में समर्थ होते हैं। दुःखों का अंतरंग कारण हमारी राग-द्वेष रूप परिणति है एवं बाह्य कारण कर्मोदय है। कर्मोदय के अनुसार अनुकूल-प्रतिकूल निमित्त मिलते रहते हैं और जीव दुःख का वेदन करता रहता है। आचार्यों ने दुःखों से बचने के लिए राग-द्वेष के परिणामों से बचने का उपाय श्रेष्ठ कहा है। अतः श्रावकों को जिनेन्द्र भगवान की भक्ति करनी चाहिए। कहा है-

जिन पूजा है कल्पतरु, सर्व सुखों की खान।

उभय लोक सुखकर 'विशद', करो प्रभु गुणगान॥

ऐसी स्थिति में लोगों को जिनधर्म से जुड़कर देव-शास्त्र-गुरु की पूजा, आराधना ही सर्वोपरि है। पुण्य संचय हो और इंसान सुखी और समृद्ध हो एवं सम्यक्त्व को प्राप्त कर परम्परा से रत्नत्रय का आराधन कर मोक्ष प्राप्त कर सके। इस हेतु **क्षमामूर्ति, परमज्ञानी, महायोगी, परम पूज्य आचार्य गुरुवर श्री विशदसागरजी महाराज** ने 'श्रेयांसनाथ विधान' की रचना की।

आचार्यश्री की तपस्तेज सम्पन्न एवं प्रसन्नमुख मुद्रा प्रायः सभी का मन मोह लेती है। आचार्यश्री के कण्ठ में साक्षात् सरस्वती का निवास है। इसे भगवान का वरदान कहें या पूर्व पुण्योदय समझ में नहीं आता। आचार्यश्री को पाकर सारी जैन समाज गौरवान्वित है। आचार्यश्री का गुणगान करना तो कदाचित संभव ही नहीं है अतः गुरुवर के चरणों में अंतिम यही भावना है-

करती रहूँ गुणगान, मुझे दो ऐसा वरदान।

तेरा नाम ही लेते-लेते, इस तन से निकले प्राण॥

गुरुवर के श्रीचरण में कोटिशः नमोस्तु..

- ब्र. आरती दीदी (संघस्थ आचार्यश्री विशदसागर)

नोट- मूलनायक के आगे एवं पञ्चकल्याण की तिथियों में यह विधान अवश्य करें।

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन् ! ।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु उपाध्याय को शत् वन्दन॥
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् !, हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन् ! ।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन॥
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ॥
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये ।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये ॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल, होकर के प्रभु अकुलाए हैं ।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं ॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है ।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है ।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ॥६॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं ।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं ।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं ।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं ॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं ।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं ॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

घटा छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा ।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा ॥

शांतये शांति धारा करोति ।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ ॥

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

जाप्यह ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः ।

जयमाला

दोहा- मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल ।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल ॥

(चाल टप्पा)

अहन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई ।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई । जि...
सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई ।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई । जि...
पञ्चाचार का पालन करते, गुण छतिस पाई ।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ॥ जि...
उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पचिस पाई ।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ॥ जि...
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई ।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई ।
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ॥ जि...

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई ।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ॥ जि...
श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई ।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ॥ जि...
वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई ॥
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ॥ जि...
घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई ।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ॥ जि...

दोहा- नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम ।
“विशद” भाव से कर रहे, शत-शत बार प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री अहंस्त्रिद्व्याचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य
चैत्यालयेभ्योः महाधर्म्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा- भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता ।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें ॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री श्रेयांसनाथ पूजन

(स्थापना)

रवि केवल ज्ञान का शुभ अनुपम, अन्तर में जिनके चमक रहा ।
भव्यों को रत्नत्रय द्वारा, जो पहुँचाते हैं मोक्ष अहा ।
संयम तप के पथ पर चलकर, जो पहुँच गये हैं शिवपुर में
वह तीर्थकर श्रेयांस जिनेश्वर, आन पधारें मम उर में ।
हमने अपनाए मार्ग कई, पर हमें मिला न मार्ग सही ।
प्रभु बड़े आप जिस मार्ग पर, हम भी अपनाएँ मार्ग वही ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(चाल छन्द)

जन्मादि जरा से हारे, इस जग के प्राणी सारे ।
हम उससे बचने आये, ये नीर चढ़ाने लाए ॥
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी ।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भाई संसार असारा, सन्तप्त जगत है सारा ।
हम चन्दन श्रेष्ठ घिसाते, चरणों में नाथ चढ़ाते ॥
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी ।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षय पद कभी न पाया, प्राणी जग में भटकाया ।
यह अक्षत श्रेष्ठ धुलाए, प्रभु यहाँ चढ़ाने लाए ॥
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी ।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

है काम वासना भाई, सारे जग में दुःखदायी ।
हम उससे बचने आए, प्रभु पुष्प चढ़ाने लाए ॥
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी ।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

सब क्षुधा रोग के रोगी, हैं साधु योगी भोगी ।
अब मैटो भूख हमारी, नैवेद्य चढ़ाते भारी ॥
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी ।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है मोह महातम भारी, मोहित है दुनियाँ सारी ।
हम मोह नशाने आए, प्रभु दीप जलाकर लाए ॥
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी ।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

चेतन को कीन्हा काला, कर्मों ने घेरा डाला ।
हम कर्म नशाने आये, यह सुरभित गंध जलाए ॥
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी ।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम मोक्ष महाफल पाएँ, भव बाधा पूर्ण नशाएँ ।
यह फल ताजे हम लाए, चरणों में श्रेष्ठ चढ़ाए ॥
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी ।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु पद अनर्घ को पाये, हम अनुपम थाल भराये ।
यह आठों द्रव्य मिलाते, प्रभु चरणों श्रेष्ठ चढ़ाते ॥
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी ।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

ज्येष्ठ वदी षष्ठी है पावन, सिंहपुरी नगरी में आन ।
गर्भकल्याण प्राप्त कीन्हें शुभ, श्री श्रेयांसनाथ भगवान् ॥
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा षष्ठ्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

फाल्गुन वदी तिथि ग्यारस को, पाए जन्म श्रेयांस कुमार ।
विमलराज रानी विमला के, गृह में हुआ मंगलाचार ॥
जन्म कल्याणक की पूजा हम, करते भक्ति भाव के साथ ।
मोक्षलक्ष्मी हमें प्राप्त हो, चरण झुकाते हम तब माथ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

एकादशी फाल्गुन कृष्णा की, श्री श्रेयांसनाथ भगवान् ।
राग-द्वेष तज दीक्षा धारे, सर्व लोक में हुए महान् ॥
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो ।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कमों का क्षय हो ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(छन्द चामर)

माघ कृष्ण की अमावस, प्राप्त किए मंगलम् ।
श्री श्रेयांस तीर्थेश, आप हुए सुमंगलम् ॥

कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम् ।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम् ॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूर्णमासी माह श्रावण, सम्मोदगिरि से ध्यान कर ।
श्रेय जिन स्वधाम पहुँचे, जगत् का कल्याण कर ॥
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से ।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से ॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा - इन्द्र सुरासुर चरण में, झुकते हैं भूपाल ।
श्री श्रेयांस जिनराज की, गाते हम जयमाल ॥

(काव्य छन्द)

जय-जय श्रेयांसनाथ, प्रभु आप कहाए ।
जय-जय जिनेन्द्र आप, तीर्थेश पद पाए ।
प्रभु सिंहपुरी नगरी में, जन्म लिया है ।
विमला श्री माता को, प्रभु धन्य किया है ।
राजा विमल प्रभु के, प्रभु लाल कहाए ।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण, अष्टमी को गर्भ में आए ।
फाल्गुन वदी ग्यारस, प्रभु जन्म पाए हैं ।
सौधर्म आदि इन्द्र, चरण सिर झुकाए हैं ।
पाण्डुक शिला पे जाके, अभिषेक कराया ।
गेण्डा का चिन्ह देख, सारे जग को बताया ।
श्रेयांस नाथ जिनवर का, नाम तब दिया ।
आके शची ने प्रभु का, शृंगार शुभ किया ।
इक्कीस लाख वर्ष का, कुमार काल है ।

युवराज सुपद पाया, प्रभु ने विशाल है।
 अस्सी धनुष की जिनवर, शुभ देह पाए हैं।
 आयु चौरासी लाख वर्ष की गिनाए हैं।
 श्री का विनाश देख, वैराग्य धर लिया।
 फाल्गुन वदी सुग्यारस, प्रभु ध्यान शुभ किया।
 जाके मनोहर वन में, तेला किए प्रभो।
 फिर घातिया विनाश करके, हो गये विभो।
 शुभ माघ की अमावस का, दिन शुभम रहा।
 कैवल्य ज्ञान पाये, श्रेयांस जिन अहा।
 रचना समवशरण की, तब देव शुभ किए।
 प्रभु के चरण में ढोक आके, देव सब दिए।
 ॐकार रूप दिव्य ध्वनि, दीन्हे प्रभु अहा।
 जीवों के लिए धर्म का, साधन महा रहा।
 धर्मादि सात सत्तर, गणधर थे पास में।
 जो दिव्य देशना की, रहते थे आस में॥
 करके विहार जिनवर, सम्मेद गिरि गये।
 आश्चर्य वहाँ देवों ने, किए कुछ नये।
 श्रावण की पूर्णिमा को, सब कर्म नसाए।
 फिर सिद्ध शिला पर, अपना धाम बनाए।
 शाश्वत अखण्ड सुख फिर, पाए प्रभु अहा।
 वह सौख्य प्राप्त करने का, भाव मम रहा।

दोहा - श्री श्रेयांस जिनदेव जी, करो श्रेय का दान।
 दाता तीनों लोक के, श्रेयस् करो प्रदान॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णाध्वं निर्व. स्वाहा।

दोहा - जो पद पाया आपने, शाश्वत रहा महान।
 वह पद पाने के लिए, किया 'विशद' गुणगान॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

प्रथम वलयः

दोहा- पर्याप्ति के भेद छह का होता संयोग।
 पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने शिवपद योग॥

(मण्डस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

रवि केवल ज्ञान का शुभ अनुपम, अन्तर में जिनके चमक रहा।
 भव्यों को रत्नत्रय द्वारा, जो पहुँचाते हैं मोक्ष अहा।
 संयम तप के पथ पर चलकर, जो पहुँच गये हैं शिवपुर में।
 वह तीर्थकर श्रेयांस जिनेश्वर, आन पधारें मम उर में।
 हमने अपनाए मार्ग कई, पर हमें मिला न मार्ग सही।
 प्रभु बड़े आप जिस मार्ग पर, हम भी अपनाएँ मार्ग वही॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

6 पर्याप्ति

चतुर्गति के जीव मरण कर, अन्य गति में जाते हैं।
 ग्रहण करें आहार वर्गणा, पर्याप्ति तब पाते हैं॥
 पर्याप्ति आहार मैटकर, पाया तुमने मुक्ति धाम।
 श्री श्रेयांस जिन के पद पंकज, मेरा बारम्बार प्रणाम॥1॥

ॐ ह्रीं आहारपर्याप्ति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्याप्ति आहार ग्रहण से, हो शरीर का शुभ निर्माण।
 योग्य देह के शक्ति पाते, है पर्याप्ति की पहचान॥
 छोड़ आप संसारी झंझट पाया, तुमने शिवपुर धाम।
 श्री श्रेयांस जिन के पद पंकज, मेरा बारम्बार प्रणाम॥2॥

ॐ ह्रीं शरीरपर्याप्ति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावें जीव इन्द्रियाँ तन में, संसारी की यह पहिचान ।
करें पूर्णतः योग्य विषय की, अपने-अपने शुभ स्थान ॥
जन्म मरण इन्द्रिय विषयों का, किया आपने पूर्ण विनाश ।
अतः आपके पद पंकज में, रहे हमारा हरदम वास ॥3॥

ॐ ह्रीं इन्द्रियपर्याप्ति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्वासोच्छ्वास प्राप्त करते हैं, इन्द्रिय पर्याप्ति के बाद ।
प्राप्त करें उस योग्य पूर्णता, भाई रखना हरदम याद ॥
पर्याप्ति आहार मेटकर, पाया तुमने मुक्ति धाम ।
श्री श्रेयांस जिन के पद पंकज, मेरा बारम्बार प्रणाम ॥4॥

ॐ ह्रीं श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भाषा पर्याप्ति पाते हैं, संसारी जो हैं त्रस जीव ।
वचन वर्णना के द्वारा वह, कर्म बन्ध भी करें अतीव ॥
पर्याप्ति पाने का झंझट, नाश हुए त्रिभुवन स्वामी ।
अतः आपके पद पंकज में, नत होकर मम प्रणमामी ॥5॥

ॐ ह्रीं भाषापर्याप्ति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचेन्द्रिय चारों गतियों में, मन पर्याप्ति के होते योग्य ।
एकेन्द्रिय से चार इन्द्रिय तक, सारे मन के रहे अयोग्य ॥
केवलज्ञानी हुए आप तब, पर्याप्ति का रहा न काम ।
श्री श्रेयांस जिन के पद पंकज, मेरा बारम्बार प्रणाम ॥6॥

ॐ ह्रीं मनपर्याप्ति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ आहार शरीर आदि यह, पर्याप्तियाँ पाते हैं जीव ।
भ्रमण करें वह भव सागर में, पाकर के जो दुःख अतीव ॥
संयम तप से कर्म निर्जरा, करके पाते केवल ज्ञान ।
पर्याप्ति फिर नाश करें जिन, पावें अनुपम पद निर्वाण ॥7॥

ॐ ह्रीं छहपर्याप्ति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वितीय वलयः

दोहा- अविरति का जिनदेव जी, करते पूर्ण विनाश ।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, करने ज्ञान प्रकाश ॥

(मण्डस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

रवि केवल ज्ञान का शुभ अनुपम, अन्तर में जिनके चमक रहा ।
भव्यों को रत्नत्रय द्वारा, जो पहुँचाते हैं मोक्ष अहा ।
संयम तप के पथ पर चलकर, जो पहुँच गये हैं शिवपुर में
वह तीर्थकर श्रेयांस जिनेश्वर, आन पधारें मम उर में ।
हमने अपनाए मार्ग कई, पर हमें मिला न मार्ग सही ।
प्रभु बड़े आप जिस मारग पर, हम भी अपनाएँ मार्ग वही ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

12 अविरति

(चौपाई छन्द)

स्पर्शन इन्द्रिय अज्ञानी, वश में न कर पाते प्राणी ।

अविरति हीन कहे जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी ॥1॥

ॐ ह्रीं स्पर्शइन्द्रिय अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रसना के आधीन बताए, अविरति धारी प्राणी गाए ।

अविरति हीन कहे जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी ॥2॥

ॐ ह्रीं रसनाइन्द्रिय अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

घ्राणेन्द्रिय के वश हो प्राणी, अविरति पाते हैं अज्ञानी ।

अविरति हीन कहे जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी ॥3॥

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चक्षु के आधीन रहे हैं, अविरति धारी जीव कहे हैं ।

अविरति हीन कहे जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी ॥4॥

ॐ ह्रीं चक्षुइन्द्रिय अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्णेन्द्रिय को वश न करते, वे प्राणी अविरति को धरते ।
अविरति हीन कहे जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी ॥5॥

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मन को वश में न कर पावें, अविरति धारी वे कहलावें ।
अविरति हीन कहे जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी ॥6॥

ॐ ह्रीं मनइन्द्रिय अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सूक्ष्म और स्थूल कहाए, पृथ्वी कायिक जीव बताए ।
एकेन्द्रिय के धारी जानो, पृथ्वी ही तन उनका मानो ॥
उनको जो बाधा हो जाए, अत्यासादन दोष कहाए ।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा ॥7॥

ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिक अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

एकेन्द्रिय जलकायिक जानो, स्थूलत्व सूक्ष्म पहिचानो ।
जल ही जिनकी देह बताई, ओस बूँद सम आकृति गाई ॥
उनको जो बाधा हो जाए, अत्यासादन दोष कहाए ।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा ॥8॥

ॐ ह्रीं जलकायिक अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अग्निकायिक प्राणी गाए, सूक्ष्म और स्थूल बताए ।
अग्नि ही तन उनका जानो, सुई की नोकों सम हों मानो ॥
उनको जो बाधा हो जाए, अत्यासादन दोष कहाए ।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा ॥9॥

ॐ ह्रीं अग्निकायिक अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वायुकायिक जीव निराले, ध्वज समान जो उड़ने वाले ।
सूक्ष्म और स्थूल बताए, एकेन्द्रिय तन वायु पाये ॥
उनको जो बाधा हो जाए, अत्यासादन दोष कहाए ।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा ॥10॥

ॐ ह्रीं वायुकायिक अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नित्य इतर साधारण जानो, सूक्ष्म स्थूल भेद पहिचानो ।
सप्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित भाई, वनस्पति प्रत्येक बताई ॥
उनको जो बाधा हो जाए, अत्यासादन दोष कहाए ।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा ॥11॥

ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिक अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शंखादि त्रस जीव बताए, दो त्रि चक्र पंचेन्द्रिय गाए ।
जंगम चलने वाले प्राणी, वर्णन करती है जिनवाणी ॥
उनको जो बाधा हो जाए, अत्यासादन दोष कहाए ।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा ॥12॥

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रिय अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा— द्वादश अविरति त्याग कर, बनते हैं जिन संत ।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने पद अर्हन्त ॥

ॐ ह्रीं द्वादश अविरति रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तृतीय वलयः

दोहा— चौबिस परिग्रह से रहित, होते जिन अर्हन्त ।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने शिवपद पन्थ ॥

(मण्डस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

रवि केवल ज्ञान का शुभ अनुपम, अन्तर में जिनके चमक रहा ।
भय्यों को रत्नत्रय द्वारा, जो पहुँचाते हैं मोक्ष अहा ।
संयम तप के पथ पर चलकर, जो पहुँच गये हैं शिवपुर में
वह तीर्थकर श्रेयांस जिनेश्वर, आन पधारें मम उर में ।
हमने अपनाए मार्ग कई, पर हमें मिला न मार्ग सही ।
प्रभु बड़े आप जिस मारग पर, हम भी अपनाएँ मार्ग वही ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम् ।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

परिग्रह 24 भेद

(ताटक छन्द)

क्रोध कषाय करें जो प्राणी, वह दुःखों को पाते हैं।
कर्मोदय से दुर्गति पाकर, वे नरकों में जाते हैं॥
कर्म नाशकर यह तीर्थकर, शिव पदवी को पाते हैं।
यह संसार वास को तजकर, शिवपुर धाम बनाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं क्रोधकषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
करके मान कषाय जगत में, शांति मन की खोते हैं।
दुर्गति के भागी बनते हैं, बीज कर्म के बोते हैं॥
कर्म नाशकर यह तीर्थकर, शिव पदवी को पाते हैं।
यह संसार वास को तजकर, शिवपुर धाम बनाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं मानकषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मायाचारी करने वाले, इस जग में भटकाते हैं।
खोते हैं विश्वास पूर्णतः, पशुगति में जाते हैं॥
कर्म नाशकर यह तीर्थकर, शिव पदवी को पाते हैं।
यह संसार वास को तजकर, शिवपुर धाम बनाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं मायाकषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लोभ कषाय से लोभी प्राणी, जोड़-जोड़ मर जाते हैं।
खाते-पीते और कोई फल, कर्मों का वह पाते हैं॥
कर्म नाशकर यह तीर्थकर, शिव पदवी को पाते हैं।
यह संसार वास को तजकर, शिवपुर धाम बनाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं लोभकषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

हास्य कषाय उदय में आवे, प्राणी हँस-हँस के खिल जावे।
जिनवर हास्य कषाय के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी॥5॥

ॐ ह्रीं हास्यकषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रति उदय में जिसके आवे, वह औरों से प्रीति जगावे।

जिनवर मान कषाय के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी॥6॥

ॐ ह्रीं रतिकषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति भाव मन में आ जावे, अप्रीति का भाव जगावे।

जिनवर माया के है नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी॥7॥

ॐ ह्रीं अरतिकषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ भी इष्टानिष्ट दिखावे, मन में प्राणी शोक मनावे।

जिनवर लोभ कषाय के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी॥8॥

ॐ ह्रीं शोक कषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चीज दिखे कोई भयकारी, मन में व्याकुल होवे भारी।

जिनवर भय कषाय के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी॥9॥

ॐ ह्रीं भयकषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वपर के गुण दोष दिखावे, मन में ग्लानि को उपजावे।

जिनवर कहे जुगुप्सा नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी॥10॥

ॐ ह्रीं जुगुप्सा कषाय रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में व्याकुल होके भारी, रमने को खोजे वह नारी।

जिनवर पुरुषवेद के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी॥11॥

ॐ ह्रीं पुरुषवेद रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमण करे पुरुषों में भारी, उसके वेदोदय हो नारी।

जिनवर स्त्रीवेद के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी॥12॥

ॐ ह्रीं स्त्रीवेद रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में नर नारी की आशा, रमने की करते अभिलाषा।

जिनवर वेद नपुंसक नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी॥13॥

ॐ ह्रीं नपुंसकवेद रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्याभाव उदय में आवे, सम्यक् श्रद्धा न हो पावे।

जिन होते मिथ्या के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी॥14॥

ॐ ह्रीं मिथ्याभाव रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

खेत परिग्रह की अभिलाषा, मानव के मन में आवे ।
रक्षा और सुरक्षा हेतु, दूर-दूर तक भटकावे ॥
यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुःखकारी ।
तीर्थकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी ॥15॥

ॐ ह्रीं क्षेत्र परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
घर मकान की आशा रखते, वास्तु परिग्रह के धारी ।
मोह जगाते रहते उसमें, हो न पाते अनगारी ॥
यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुःखकारी ।
तीर्थकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी ॥16॥

ॐ ह्रीं वास्तु परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
चाँदी के बर्तन गहने की, आशा रखते हैं भारी ।
मूर्छा रखते हैं रुपयों की, हिरण्य परिग्रह के धारी ॥
यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुःखकारी ।
तीर्थकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी ॥17॥

ॐ ह्रीं हिरण्य परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
स्वर्णमयी आभूषण की जब, मन में आवे अभिलाषा ।
स्वर्ण परिग्रह धारी की यह, भाई जानो परिभाषा ॥
यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुःखकारी ।
तीर्थकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी ॥18॥

ॐ ह्रीं स्वर्ण परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
पशुधन पालन की अभिलाषा, मन में जो रखते प्राणी ।
धन परिग्रह के धारी होते, हैं वह मानव अज्ञानी ॥
यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुःखकारी ।
तीर्थकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी ॥19॥

ॐ ह्रीं धन परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अभिलाषा जिनके अनाज की, हैं अनाज के व्यापारी ।
जोड़-जोड़ कोठों में भरते, धान्य परिग्रह के धारी ॥
यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुःखकारी ।
तीर्थकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी ॥20॥

ॐ ह्रीं धान्य परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
सेवा और चाकरी हेतु, पैसा देकर रखते पास ।
पास में रखते हैं लोगों को, परिग्रह यह कहलाए दास ॥
यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुःखकारी ।
तीर्थकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी ॥21॥

ॐ ह्रीं दास परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
सेवा और चाकरी हेतु, दासी रखते अपने पास ।
परिग्रह के धारी करते हैं, स्वयं धर्म का अपने हास ॥
यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुःखकारी ।
तीर्थकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी ॥22॥

ॐ ह्रीं दासी परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
वस्त्रों की अभिलाषा मन में, रखते हैं जो जग के जीव ।
कुप्य परिग्रह के धारी वह, आस्रव नितप्रति करें अतीव ॥
यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुःखकारी ।
तीर्थकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी ॥23॥

ॐ ह्रीं कुप्य परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
बर्तन की अभिलाषा जिनके, मन में लगी है अपरम्पार ।
भाण्ड परिग्रह धारी जग में, बन पाते हैं न अनगार ॥
यह बहिरंग परिग्रह भाई, जग में गाया दुःखकारी ।
तीर्थकर यह कर्म नाशकर, हो जाते हैं अविकारी ॥24॥

ॐ ह्रीं भाण्ड परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अंतरंग परिग्रह के चौदह, बाह्य के दश बतलाए भेद।
परिग्रह की अभिलाषा धारी, न मिलने पर करते खेद॥
भेद परिग्रह के हैं चौबिस, जग में गाये दुःखकारी।
अभिलाषा इनकी जो तजते, वह होते हैं अविकारी॥25॥

ॐ ह्रीं चौबिस परिग्रह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा- बाईस परीषह जय करें, चौदह जीव समास।
द्वादश तपधारी मुनि, करते शिवपुर वास॥

(मण्डस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

रवि केवल ज्ञान का शुभ अनुपम, अन्तर में जिनके चमक रहा।
भव्यों को रत्नत्रय द्वारा, जो पहुँचाते हैं मोक्ष अहा।
संयम तप के पथ पर चलकर, जो पहुँच गये हैं शिवपुर में
वह तीर्थकर श्रेयांस जिनेश्वर, आन पधारें मम उर में।
हमने अपनाए मार्ग कई, पर हमें मिला न मार्ग सही।
प्रभु बड़े आप जिस मारग पर, हम भी अपनाएँ मार्ग वही॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

22 परीषह जय

(दोहा)

क्षुधा परीषह जय पाते हैं, मुनि वृन्द होके अविकार।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहकर, करें साधना मुनि अनगार॥1॥

ॐ ह्रीं क्षुधा परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा परीषह जय करते हैं, वीतराग साधु अनगार।

ज्ञान ध्यान तप के धारी मुनि, जग में होते मंगलकार॥2॥

ॐ ह्रीं तृषा परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुश्किल शीत परीषह जय है, वह भी सहते संत महान।

सम्यक् चारित्र पाने वाले, होते संयम के स्थान॥3॥

ॐ ह्रीं शीत परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्मी की लपटों को सहते, निस्पृह साधक हो अविकार।

उष्ण परीषह जय के धारी, जग में गाए मंगलकार॥4॥

ॐ ह्रीं ऊष्ण परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दंश मशक परीषह जय करते, समता धारी संत प्रधान।

कठिन साधना करने वाले, तीन लोक में रहे महान॥5॥

ॐ ह्रीं दंश मशक परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर बाह्य लाज का कारण, नग्न परीषह सहते हैं।

ज्ञान ध्यान तप के धारी मुनि, समता भाव से रहते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं नग्न परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति परीषह जय के धारी, होते हैं साधु निर्ग्रन्थ।

विशद साधना करने वाले, करते हैं कर्मों का अन्त॥7॥

ॐ ह्रीं अरति परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हाव-भाव लखकर स्त्री के, समता से रहते अनगार।

स्त्री परीषह जय करते हैं, वीतराग साधु मनहार॥8॥

ॐ ह्रीं स्त्री परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चर्या परीषह जय धारी मुनि, पैदल करते सदा विहार।

यत्नाचार धरें चर्या में, जिनकी चर्या अपरम्पार॥9॥

ॐ ह्रीं चर्या परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान आदि को बैठें, विविक्त आसन के आधार।

निषद्या परीषह जय करते हैं, जैन मुनि होके अविकार॥10॥

ॐ ह्रीं निषद्या परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षिति शयन एकाशन में मुनि, करते हैं समता को धार।

शैय्या परीषह जय पाते हैं, जैन मुनि होके अविकार॥11॥

ॐ ह्रीं शैय्या परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कटु वचन बोलें यदि कोई, फिर भी न करते हैं रोष।
जैन मुनिश्वर समता धारें, परीषह जय धारी आक्रोष ॥12॥

ॐ ह्रीं आक्रोश परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छंद)

वध करे यदि कोई प्राणी, न बोलें मुनि कटु वाणी।
मुनि वध परीषह जय धारी, हैं जग में मंगलकारी ॥13॥

ॐ ह्रीं वध परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराज याचना धारी, परीषह जय करते भारी।
इनकी है महिमा न्यारी, होते हैं मंगलकारी ॥14॥

ॐ ह्रीं याचना परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना लाभ प्राप्त कर पावें, मन में समता उपजावें।
मुनि अलाभ परीषह वाले, इस जग में रहे निराले ॥15॥

ॐ ह्रीं अलाभ परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में कोई रोग सतावें, मुनि शांत भाव को पावें।
जय रोग परीषह धारी, होते जग मंगलकारी ॥16॥

ॐ ह्रीं रोग परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृण शूल आदि चुभ जावे, फिर भी मन समता आवे।
तृण स्पर्श जयी कहलावे, परीषह में न घबड़ावे ॥17॥

ॐ ह्रीं स्पर्श परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन-मल से लिप्त हो जावे, मन आकुलता न लावे।
मुनि मल परीषह जय धारी, जग में रहते अविकारी ॥18॥

ॐ ह्रीं मल परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्कार पुरस्कार जानो, परीषह जय धारी मानो।
मुनिवर होते शुभकारी, इस जग में मंगलकारी ॥19॥

ॐ ह्रीं सत्कार पुरस्कार परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर शुभ प्रज्ञा पावें, प्रज्ञा में न हर्षावे।
मुनि प्रज्ञा परीषह धारी, जय पाते हैं अविकारी ॥20॥

ॐ ह्रीं प्रज्ञा परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान परीषह गाया, मुनिवर ने जय शुभ पाया।
न खेद हृदय में लावें, मन में समता उपजावें ॥21॥

ॐ ह्रीं अज्ञान परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराज अदर्शन धारी, होते उसके जयकारी।
मुनि परिषह जय शुभ पावें, मन में समता उपजावें ॥22॥

ॐ ह्रीं अदर्शन परीषह रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14 जीव समास

(शम्भू छंद)

पाँच भेद स्थावर प्राणी, अपर्याप्त जिन गए हैं।

नहीं रोकते रुकते हैं जो, सूक्ष्म जीव बतलाए हैं॥

जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।

अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी ॥23॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मअपर्याप्त जीव समास रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच भेद स्थावर के जो, सूक्ष्म जीव कहलाए हैं।

छह पर्याप्ति पाने वाले, जो पर्याप्त कहाए हैं॥

जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।

अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी ॥24॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मपर्याप्त जीव समास रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच भेद बादर एकेन्द्रिय, जीवों के बतलाए हैं।

रुकने और रोकने वाले, अपर्याप्त कहलाए हैं॥

जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।

अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी ॥25॥

ॐ ह्रीं बादर अपर्याप्त जीव समास रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच भेद बादर एकेन्द्रिय, पर्याप्ति शुभ पाए हैं।

स्थावर पर्याप्त जीव वह, आगम में बतलाए हैं॥

जीव समास नशाने वाले, बने आप केवल ज्ञानी।

अतः आपकी पूजा करने, आते हैं जग के प्राणी ॥26॥

12 तप

(चाल छंद)

जो अनशन तप को धारें, वह अपने कर्म निवारें ।
श्री जिनवर जग हितकारी, हैं जग में मंगलकारी ॥37॥

ॐ ह्रीं अनशन तप रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप ऊनोदर शुभ करते, फिर कर्म कालिमा हरते ।
श्री जिनवर जग हितकारी, हैं जग में मंगलकारी ॥38॥

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप परिसंख्या व्रतधारी, मुनिवर होते अनगारी ।
श्री जिनवर जग हितकारी, हैं जग में मंगलकारी ॥39॥

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्या तप रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वादिष्ट रसों के त्यागी, आत्मानुभूति अनुरागी ।
श्री जिनवर जग हितकारी, हैं जग में मंगलकारी ॥40॥

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शैयाशन विविध लगाएँ, निज की अनुभूति जगाएँ ।
श्री जिनवर जग हितकारी, हैं जग में मंगलकारी ॥41॥

ॐ ह्रीं शैयाशन तप रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप काय क्लेश जगाएँ, चेतन में चित्त लगाएँ ।
श्री जिनवर जग हितकारी, हैं जग में मंगलकारी ॥42॥

ॐ ह्रीं काय-क्लेश तप रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(छन्द : पद्म नन्दीश्वर)

तप अन्तरंग शुभ धार, होते अनगारी ।
गुण विनय आदि मनहार, जग मंगलकारी ॥
हम तव गुण पाने नाथ, चरणों में आये ।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने को लाए ॥43॥

ॐ ह्रीं विनय तप रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप प्रायश्चित्त शुभकार, साधु पाते हैं ।
विषयों से हो अविकार, ध्यान लगाते हैं ॥
हम तव गुण पाने नाथ, चरणों में आये ।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने को लाए ॥44॥

ॐ ह्रीं प्रायश्चित्त तप रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वैय्यावृत्ति तप श्रेष्ठ, जिसने भी पाया ।
कर्मों का उनने रोग, क्षण में विनशाया ॥
हम तप गुण पाने नाथ, चरणों में आये ।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने को लाए ॥45॥

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति तप रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप स्वाध्याय शुभधार, ज्ञानी बन जाते ।
होकर के मुनि अनगार, शिव पदवी पाते ॥
हम तप गुण पाने नाथ, चरणों में आये ।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने को लाए ॥46॥

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

व्युत्सर्ग सुतप हो लीन, निज गुण हम पाएँ ।
कर्मों का करें विनाश, चेतन महकाएँ ॥
हम तप गुण पाने नाथ, चरणों में आये ।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने को लाए ॥47॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है अंतरंग तप ध्यान, अनुपम शुभकारी ।
हो कर्म निर्जरा खास, मुक्ति पदकारी ॥
हम तप गुण पाने नाथ, चरणों में आये ।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने को लाए ॥48॥

ॐ ह्रीं अन्तरंग तप रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बाइस परीषह जय करते हैं, चौदह जीव समास विहीन ।
द्वादश तप को तपने वाले, करते हैं कर्मों को क्षीण ।
विशद साधना करने वाले, साधु गाये हैं निर्ग्रन्थ ।
कर्म घातिया के नाशी वह, बन जाते हैं जिन अर्हन्त ॥49॥

ॐ ह्रीं द्वाविंशति परिषह जय चतुर्दश जीव समास रहिताय द्वादश तप सहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाप- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एम् अहं श्री श्रेयांशनाथ जिनेन्द्राय नमः ।

समुच्चय जयमाला

दोहा- श्रेयांसनाथ भगवान का, किए निरन्तर जाप ।
जयमाला गाए विशद, कट जाएँगे पाप ॥

(शम्भू छंद)

श्री श्रेयांस जिनराज लोक में, मंगलमय मंगलकारी ।
भवि जीवों के भाग्य विधाता, अनुपम है संकटहारी ॥
महिमा जिनकी अगम अगोचर, सारे जग में अपरम्पार ।
पूजा अर्चा करने वाला, हो जाता है भव से पार ॥1॥
तीर्थकर प्रकृति बन्ध कर, पाया अनुपम पुण्य अपार ।
हुए पंचकल्याणक धारी, तीन लोक में अतिशयकार ॥
स्वर्ग लोग से चयकर आए, पृथ्वी पर अवतार लिया ।
सिंहपुरी नगरी को तुमने, प्रभु जी अतिशय धन्य किया ॥2॥
जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर, देवों ने जयकार किया ।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, मेरु गिरि पर न्हवन किया ॥
शुभ भावों से सुरपति आकर, चरणों शीश झुकाते हैं ।
खुश होकर के भक्ति भाव से, प्रभु जी के गुण गाते हैं ॥3॥

पाकर के कोई निमित्त शुभ, मन वैराग्य जगाते हैं ।
वन में जाकर के जिन प्रभु जी, संयम को अपनाते हैं ॥
पंच मुष्ठी से केश लुंचकर, पंच महाव्रत धरते हैं ।
लौकान्तिक चरणों में आकर, शुभ अनुमोदन करते हैं ॥4॥
आत्म साधना करते स्वामी, केवलज्ञान जगाते हैं ।
स्वर्ग लोक से इन्द्र प्रभु की, भक्ति करने आते हैं ॥
इन्द्र की आज्ञा से कुबेर शुभ, समवशरण बनवाता है ।
प्रभु के चरणों वन्दन करके, मन ही मन हर्षाता है ॥5॥
गंधकुटी में कमलाशन पर, प्रभु जी शोभा पाते हैं ।
दिव्य देशना भवि जीवों को, अतिशय आप सुनाते हैं ॥
प्रभु का दर्शन करने वाले, अनुपम पुण्य कमाते हैं ।
दिव्य देशना पाकर प्राणी, सम्यक् दर्शन पाते हैं ॥6॥
प्रभु की दिव्य देशना पाकर, सम्यक् राह प्रदान करें ।
अतिशय पुण्य कमावें प्राणी, जो प्रभु का गुणगान करें ॥
कर्म नाश कर अपने सारे, शिवनगरी को जाते हैं ।
सुख अनन्त के भोगी बनकर, शिवपुर धाम बनाते हैं ॥7॥

दोहा- वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, गुण अनन्त की खान ।

“विशद” ज्ञान पाने यहाँ, करते हैं गुणगान ॥

ॐ ह्रीं सर्वदोष रहिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- प्रभु की महिमा है अगम, जान सके न कोय ।
विशद भक्ति जो भी करे, शिवपुर वासी होय ॥

इत्याशीर्वादः

श्री 1008 श्रेयांसनाथ भगवान की आरती

ॐ जय श्रेयांस प्रभो, स्वामी जय श्रेयांस प्रभो ।

भक्त आरती करने, आए यहाँ विभो ॥

ॐ जय.....

विमलसेन के सुत हो, विमला के प्यारे ।

सिंहपुरी में जन्मे, गेण्डा चिह्न धारे ॥

ॐ जय.....॥1॥

लख चौरासी पूरब, आयु प्रभु पाए ।

अस्सी धनुष ऊँचाई, तन की कहलाए ॥

ॐ जय.....॥2॥

गृह में रहकर प्रभु ने, राज्य सुपद पाया ।

हृदय जगा वैराग्य प्रभु को, वह भी न भाया ॥

ॐ जय.....॥3॥

राज्य पाट सब त्यागा, परिजन को छोड़ा ।

विषय भोग से प्रभु ने, भी नाता तोड़ा ॥

ॐ जय.....॥4॥

केश लोंचकर प्रभु ने, शुभ दीक्षा धारी ।

पञ्च महाव्रत धारे, होके अविकारी ॥

ॐ जय.....॥5॥

तीन योग से प्रभु ने, आत्म को ध्याया ।

कर्म घातिया नाशे, 'विशद' ज्ञान पाया ॥

ॐ जय.....॥6॥

हम सेवक तुम स्वामी, कृपा करो दाता ।

हो समृद्धि प्रभु जी, पाएँ सुख साता ॥

ॐ जय.....॥7॥

प्रशस्ति

(दोहा)

तीन लोक के मध्य है, जम्बू द्वीप प्रधान ।

सात क्षेत्र में जो बटा, पावन परम महान ॥

भरत क्षेत्र दक्षिण दिशा, में मेरु से जान ।

भारत देश जिसमें रहा, अनुपम श्रेष्ठ प्रधान ॥

भारत देश का प्रान्त शुभ, हरियाणा है नाम ।

रेवाड़ी है जिला शुभ, आयों का शुभ धाम ॥

जैनपुरी के मध्य है, जिन मंदिर शुभकार ।

चन्द्रप्रभु जी शोभते, वेदी में मनहार ॥

दो हजार ग्यारह शुभम्, पावन वर्षायोग ।

प्रभु की भक्ति का बना, यह पावन उपयोग ।

जिन श्रेयांस का यह लिखा, पावन परम विधान ।

भक्ति से कीन्हा यहाँ, जिन प्रभु का गुणगान ॥

कृष्ण पक्ष भादों तिथि, ग्यारस दिन बुधवार ।

पूर्ण हुआ लेखन विशद, मंगलमयी विधान ॥

लघुधी तथा प्रमाद से, किया गया जो कार्य ।

यह प्रमाण जानें सभी, भारत देश के आर्य ॥

भूल-चूक इसमें हुई, उसका करें सुधार ।

पूजा भक्ति के लिए, पावें शुभ आधार ॥

अन्तिम है यह भावना, पावें हम सदज्ञान ।

भव संतति को नाशकर, करें "विशद" कल्याण ॥

प्रभु के चरण प्रसाद से, पूरी होगी आस ।

मोक्ष मिलेगा शीघ्र ही, पूरा है विश्वास ॥

श्रेयांसनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल, झुका भाव से शीश।
भक्ति करे जो भी विशद, पा जाए आशीष।
चैत्य चैत्यालय धर्म जिन, आगम मंगलकार।
श्रेयांशनाथ भगवान को, वन्दन बारम्बार॥

(चौपाई)

जय जय श्रेयांशनाथ गुणधारी, स्वामी तुम हो जग हितकारी।
तुमने भेष दिगम्बर धारा, लगे हृदय को प्यारा-प्यारा॥
स्वामी तुम सर्वज्ञ कहाए, तीर्थकर ग्यारहवें गाए।
शांत छवि है श्रेष्ठ निराली, जन-जन का मन हरने वाली॥
नाम तुम्हारा प्यारा-प्यारा, जग को तुमने दिया सहारा।
सिंहपुरी नगरी है प्यारी, श्रेष्ठ भक्त रहते नर-नारी॥
राजा विष्णुराज कहाए, रानी वेणु देवी पाए।
स्वर्ग लोक से चय कर आए, सिंहपुरी में मंगल छाए॥
हुई रत्न वृष्टि शुभकारी, नगरी पावन हो गई सारी।
श्रेष्ठ कृष्ण दशमी शुभ जानो, गर्भकल्याणक प्रभु का मानो॥
जन्म प्रभु ने जिस दिन पाया, इन्द्रराज ऐरावत लाया।
नाम श्रेयांस कुमार बताया, अनुपम जयकारा लगवाया॥
चन्द्र कलाओं जैसे स्वामी, वृद्धि पाए थे शिवगामी।
मेरु गिरि पर न्हवन कराया, इन्द्र ने अपना धर्म निभाया॥
फाल्गुन कृष्णा ग्यारस भाई, जन्म तिथि जिनवर की गई।
प्रभु के चरणों शीश झुकाया, गेण्डा चिह्न देख हर्षाया॥
अस्सी धनुष रही ऊँचाई, श्री श्रेयांश के तन की भाई।
लाख चौरासी वर्ष की स्वामी, आयु पाए अन्तर्यामी॥
देख बसन्त लक्ष्मी विनशाई, जिनवर ने शुभ दीक्षा पाई।
फाल्गुन कृष्णा चौदस जानो, प्रभु का तप कल्याणक मानो॥

देव पालकी लेकर आए, प्रभुजी को उसमें बैठाए।
तभी पालकी देव उठाए, मानव उसमें रोक लगाए॥
प्रभु को लेकर हम जाएँगे, साथ में हम संयम पाएँगे।
देव तभी सुनकर घबराए, नहीं पालकी देव उठाए॥
लिए पालकी मानव जाते, गगन में प्रभु को ले उड़ जाते।
वन में प्रभुजी को पहुँचाए, वस्त्र उतारे दीक्षा पाए॥
केशलुंच निज हाथों कीन्हें, देवों ने भक्ति से लीन्हें।
दिव्य पेटिका में ले चाले, क्षीर सिन्धु में जाकर डालें॥
माघ शुक्ल द्वितीया शुभकारी, हुई लोक में मंगलकारी।
निज आत्म का ध्यान लगाए, प्रभुजी केवलज्ञान जगाए॥
समवशरण आ देव रचाते, जिनप्रभु की शुभ महिमा गाते।
सप्त योजन विस्तार बताया, महिमाशाली अनुपम गाया॥
गणधर श्रेष्ठ बहत्तर गाए, कुन्थु जिनमें प्रथम कहाए।
दिव्य ध्वनि प्रभु की शुभकारी, चउ संध्या में खिरती न्यारी॥
सुर नर पशु सभी मिल आते, कोई सम्यक् दर्शन पाते।
कोई देश व्रतों को पावें, कोई संयम को उपजावें॥
श्रावण शुक्ल पूर्णिमा प्यारी, तिथि हो गई मंगलकारी।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, हुए पथ के अनुगामी॥
अपने सारे कर्म नशाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।
विशद भावना हम यह भाए, तव गुण पाने को हम आए॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति सौभाग्य पा, बने श्री का नाथ॥
श्री श्रेयांस के नाम का, करे भाव से जाप।
विशद ज्ञान को पाएगा, कट जाएँगे पाप॥

जाप- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अहं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः।

प. पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं।
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वान

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवैष्ट इति आह्वानम्
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाथ जलं
निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाथ चंदनं
निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान्
निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाथ पुष्पं
निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैं।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाथ नैवेद्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फँसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम दीप जलाने आये हैं।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाथ दीपं
निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैं।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति
स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम्
निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ्य समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क
गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण।
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी।
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े।
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क
in vɪpɪk;Z ɪzfr"ɛk dɪ 'kɔɦk] nks gɪkɪ lu~ ɪk;ɪp jɪkA
rsjg Qjojh calr iapeh] cus xq# vɪpɪk;Z vɪkAA
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते।
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तब वाणी अनुपम न्यायी है, करुणा की शुभ धारा बहती है।
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है।
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना।
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता।
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें।
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें।
ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।

मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

ब्र. आस्था दीदी

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ॥

गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता ॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ॥

गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया ॥
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ॥

गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धार।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वार ॥
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ॥

गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे ॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ॥

गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय ॥

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर